

1.092

新嘉坡：金蘭館代印

ॐ नमः श्री कृष्णाय महाप्रतिभयाय ॐ नमः ॥ ४॥

印子

कोती क
म नसिंग
प म
साधु न
क त
देसा कं
राय न
सेनो न
र न
नग्न न रा मेना न घन

मधुक्रिन्दानव॥ ३॥ निनियन्नायनः बालाहाय्यश्वस्तः
बालाहाकिमागलिलावनि॥ पिगादालिमलिविः गुरुवक्तुजाज
विषि॥ कुरुगुरुपुत्र्याणिनिदनीगि॥ महिवास्तुनदाव॥ ४॥
वर्तुथनायनः नयसिहन्पुः श्वस्तः नयसिहकिमागापदुमा
वनिः पिगाहन्निविमनिवि॥ गुरुश्रमिगगजनिविच्छुष्टम्
नूतानहनाकिविस्तनदानव॥ ५॥

यंचमनायनः वादनरूपश्वस्तः॥ वावनकिमागाकनकावनिः
पिगावेनावनविषिगुरुकासिवमविषिः कुरुवनधविषिः गुरुका
सिवगविषिः कुरुवनविषिः पुत्र्याणिनिदनीगिः वनिगाजादानव॥ ६॥
षस्तमनायनः यमूनामरूपश्वस्तः यमूनामकिमागावनकावनिः
पिगाकुरुदनिविषिः कुरुकधकनः पुत्र्याणिनिदनीगिः सहसवाहदान

३॥ १॥ सवन्मना नायनः श्री नामर्वड रूप श्रवसाग्रा ॥ श्री नाम
र्वड किमागार्क रसिना वगिः यिगाद सनगना ज्ञाः गुरुवा सथ नि
विः ॐ गु अर्द्धाहाः पूरुपागु निदनी गि ॥ दसममक नावदान
व ॥ ८॥ १॥ सवन्मना नायनः श्री कृष्ण रूप श्रवसाग्रा ॥ श्री कृष्ण किमाग
दवकि ॥ यिगा वासुदव निविः गुरुवा सनिविः ॐ गु म थूना पूरु

पागु निदनी गि ॥ कंसा तूल दानु व ॥ ९॥ नवमना नायनः बृध रू
प श्रवसाग्राः बृध किं ^{माता} ^{पिता} वावनि ॥ कामि वग निविः गुरुगंग न
विविः ॐ गु पूरु श्रवसाग्राः पूरुपागु निदनी गिः गथा सवदान वः
॥ १० ॥ दसमना नायनः कर्त्तृ कि रूप श्रवसाग्राः कर्त्तृ कि कामाग
नी गि ॥



एशिया अभिलेख

ASIA ARCHIVES

1.792

कै पीता : दुनिया सब मेरे कहता मा ॥ एक आवता य
क आवता : ई फसन सार मूता पर मा हाता ॥ २ ॥ धन
संपत्ति मे सको ही पा फने विपत्ती परे को हात दि ॥
रो गवा ठा से पकरी त ई मे रुम के दो सन हि मे रे ॥ ३ ॥
चार भवन मे दो सति जे गिमि रो मंदा बी रं दी का ॥ क

लिऊ ग मेतु मः हरता कर तात मू वि नू और नू दिः मे रे
माता ॥ ४ ॥ वा ना वि दात दू ना ना तो केः सक को सा वही
॥ दूता वरा सेः रहने पावेः तू मारेः सरन मे आ मः पा
मे रे ॥ ५ ॥ वा हो मे ई हाव योती ती वार उ ग क को सीता
माः ॥ सन वार से चलता फिरता ओ ट प्रदर दीत रं न
मे रे मा हाता ॥ ६ ॥ ० ॥ ॐ नमः